ओ३म्
स्वस्ति पंथा मनु चरेमा

परिवार नियोजन राष्ट्रीय संकट

पूजनीय जगद्गुरु शंकराचार्य जी महाराज
गोवर्धन पीठाधीश्वर

आचार्य विनोबा भावे
तथा
राष्ट्रीय नेताओं की स्पष्ट घोषणा

संग्रहकर्त्ता—
आयुर्वेद प्रेमी छगनलाल कश्यप

प्रकाशक—
पंडित जगन्नाथ उपाध्याय
संस्थापक गौतम हाई स्कूल, अजमेर

संकलनकर्ता

पं. छगनलाल कश्यप

संचालक

भरत आयुर्वेद गृह उद्योग सदन

आनासागर कृष्णगंज, अजमेर

(राजस्थान)

ओ३म्

तमसो मा ज्योतिर्गमय

परिवार नियोजन राष्ट्रीय संकट

संकलनकर्त्ता

पं० छगनलाल कश्यप

संचालक

भरत आयुर्वेद गृह उद्योग सदन, अजमेर

प्रकाशक

पं० जगन्नाथ उपाध्याय

संस्थापक—गौतम हाई स्कूल, अजमेर

भूमिका लेखक

वैद्यराज पं० भागीरथ जी जोशी, आयुर्वेदाचार्य

उदयपुर (राजस्थान)

द्वितीयवार
१०,०००

दीपावली पर्व पर
कार्तिक कृष्णा ३०
सम्वत् २०२५
दिनांक २१-१०-६८

मूल्य लागत मात्र
केवल
[illegible]

कृपया स्वयं अपने परिवार सहित पढ़ें और मित्रों को पढ़ावें

अनुक्रमणिका

ई वैदिक पुस्तकालय मुम्बई

धर्म प्रचारार्थ

गौ चालीसा

गौ चालीसा पढ़ें पढ़ावें।
जीवन अपना सफल बनावें॥

लेखक

पं० जगन्नाथ उपाध्याय

संस्थापक—

गौतम हाई स्कूल, कड़क्का चौक, अजमेर

भूमिका

स्वतन्त्र भारत के इन २० वर्षों में अपनी इस लोकतान्त्रिक सरकार ने पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति का अनुकरण कर उसको यहां चिरस्थायी रूप से जमाने तथा भारतीयता एवं हिन्दुत्व का नाश करने के उद्देश्य से जो जो साधन उपयोग में लिये हैं उनमें से "बर्थ कन्ट्रोल" या सन्तति निग्रह भी एक प्रमुख अस्तित्व लिये हुए है। जिसका भारत की भोली जनता और अधिकांशतः हिन्दू समाज शिकार बना हुआ है।

पाश्चात्य देशों के इशारों पर चलने वाली यह भेद नीति प्रधान सरकार अल्प संख्यकों के संरक्षण की आड़ लेकर स्पष्टतः देश में ईसाइयों और यवनों की दिनों दिन वृद्धि करने पर दृढ़ संकल्पित है जिसका फल आगामी कुछ ही वर्षों में देश के नवीन विभाजन के रूप में दिखाई पड़ सकता है।

प्रस्तुत संकलन में लेखक ने जिस बिन्दू की ओर संकेत किया है वह भारतीय राष्ट्रीयता एवं राजनैतिक अखंडता से कम महत्वपूर्ण नहीं है। पाठकगण स्वयं अपने विवेक एवं सहज बुद्धि द्वारा कर्तव्याकर्तव्य का निर्णय लेकर भारत की राष्ट्रीयता को अक्षुण्ण रखने के साथ ही भारतीय संस्कृति, जो कि धीरे धीरे पतनोन्मुख हो रही है, उसकी रक्षा करने का संकल्प करे ऐसी अपेक्षा है।

गणतन्त्रात्मक जनतन्त्र में समूचे देश का पूर्ण विश्वास है। और इसी पद्धति पर आधारित सिद्धान्तों पर चलने का संकल्प देशवासियों ने लिया है। जनतन्त्रात्मक पद्धति की सफलता जनता के बहुमत में निहित है। लेकिन खेद होता है यह जान कर कि दिन-प्रतिदिन भारत

की जनता में भारतीय संस्कृति के अनुयायी हिन्दुओं की संख्या का प्रतिशत कम होता जा रहा है। यह परिवार नियोजन का ही दुष्परिणाम है। राजनैतिक अखाड़ेबाज अपनी स्वार्थसिद्धि का लक्ष्य लेकर इस पर परिवार नियोजन प्रक्रिया को सफल बनाने के लिये विदेशों से अरबों रुपयों का ऋण ले रहा हैं और भारतीय जनता को कर्जदार बना रहे हैं। इतनी बड़ी धनराशि का उपयोग भारतीय खून को नष्ट करने में किया जा रहा है। अगर यही क्रम रहा तो आगामी कुछ ही वर्षों में भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रीयता का बीज यत्र-तत्र ढूंढने पर शायद ही मिले और ये विघटनकारी अराष्ट्रीय तत्व वर्तमान पीढ़ी को न केवल भ्रष्टाचार अपितु व्यभिचार एवं विलासिता तथा चरित्रहीनता के गर्त में ढकेल देने में सफल होकर समस्त राष्ट्र को ही डुबो न बैठे।

अतः पाठकगण इस पुस्तिका में अभिव्यक्त महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर मनन कर इस निर्णय पर पहुंचेंगे कि "परिवार नियोजन प्रणाली द्वारा हमारे अस्तित्व को बहुत बड़ा खतरा होने वाला है"। इससे बचने के लिये श्रीमद्‌जगदगुरु शंकराचार्य जी महाराज की सामायिक चेतावनी और आदेश को घर घर पहुंचा कर प्रत्येक राष्ट्र-भक्त हिन्दू नागरिक को सावधान करते हुए उसे परम्परागत संस्कृति के आधार पर जीवन यापन की प्रेरणा दें और प्रत्येक परिवार को इन भ्रष्ट एवं "लूप" "नसबन्दी" आदि अप्रकृतिक तथा भयंकर रोगोत्पादक साधनों का प्रयोग करने से रोकें एवं अत्यावश्यक आपत्काल परिस्थिति में "सन्तति नियमन" हेतु विश्व चिकित्सा पद्धतियों के मूलस्रोत भारत के जीवन विज्ञान "आयुर्वेद" द्वारा सर्वजन सुखाय एवं सर्वजन हिताय प्रतिपादित प्रयोग और सदाचार पर आधारित "स्वस्थवृत्त" का पालन करते रहने की प्रेरणा दें।

वैद्य भागीरथ जोशी
मोती चोहट्टा, उदयपुर

प्रकाशक के दो शब्द

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः

प्रिय भारतवासियो !

इसमें सन्देह नहीं कि यह परिवार नियोजन राष्ट्रीय संकट है। यह समाज के सर्वनाश का षडयन्त्र है। यह परिवार नियोजन तो भारतीय संस्कृति को निर्मूल कर दिखा देने वाला एक घृणित साधन है। सो कैसे ? यह सन्तशिरोमणि बापू की याद सन्त विनोबा भावे के विचारों को विचार देखें अथवा ग्राम गुरु नहीं, नगर गुरु नहीं, प्रान्त गुरु नहीं, देश गुरु नहीं, किन्तु जगतगुरु श्री शंकराचार्य श्री निरंजनदेव जी महाराज के वचनों को मानें तो उद्धार है वरना बंटाढार है। यही जान-कर "परिवार नियोजन राष्ट्रीय संकट" तथा सन्तति निरोध व प्राप्ति पर "आयुर्वेदिक चमत्कार पूर्ण प्रयोग" नाम की किताब पढ़ें, पढ़ावें और इस संकट से बच आनन्द मनावें।

प्रार्थी

जगन्नाथ उपाध्याय,

संस्थापक श्री गौतम हाई-स्कूल

कड़क्का चौक, अजमेर

आभार

"परिवार नियोजन राष्ट्रीय संकट" नामक लघु पुस्तिका का द्वितीय संस्करण आपके सम्मुख रखते हर्ष होता है। इस परिवार नियोजन के दुष्परिणामों पर पूजनीय जगद्गुरु शंकराचार्य जी महाराज गोवर्धन पीठाधीश्वर के चेतावनी मय उपदेश सब वर्तमान पत्रों में प्रकाशित हो चुके हैं तथा अन्य राष्ट्रीय नेताओं व धर्माचार्यों के विचार भी समय समय में प्रकाशित होते आये हैं, लेकिन यह उपदेश सर्व सामान्य जनता तक पहुँचाने का हमारा संकल्प कई दिनों से यह उपरोक्त महापुरुषों के मार्ग दर्शनमय प्रवचनों का संग्रह-सामग्री के कारण विश्राम ले रहा था।

अभी गत अखिल भारतीय गोरक्षा महासम्मेलन ब्यावर के अवसर प्रथम संस्करण के रूप में कुछ अंश प्रकाशित करा दिया वह हाथों हाथ गोरक्षा सम्मेलन में ही समाप्त हो गया।

इस द्वितीय संस्करण को पूर्णरूप में व शुद्ध कर निम्नलिखित महानुभावों के विशेष सहयोग से यह परिवार नियोजन राष्ट्रीय संकट नामका प्रचार ट्रैक्ट प्रकाशित करने में सर्वश्री जगद्गुरु शंकराचार्य महाराज तथा सभी विद्वान लेखक व धर्माचार्यों का मैं अत्यन्त आभारी हूँ, जिन्हों के आशीर्वाद से यह पुस्तक संग्रह हो सकी। इसके अतिरिक्त भूमिका के रूप में पंडित भागीरथ जी जोशी उदयपुर और प्रकाशक की महान जवाबदारी के रूप में पं० जगन्नाथ जी उपाध्याय पुस्तक को शुद्ध व शीघ्र और योग्यतम रूप में प्रकाशित कराने में वैदिक यंत्रालय के प्रबन्धकर्ता श्री सुरेन्द्र प्रधानजी शर्मा श्री पंडित भगवान स्वरूपजी न्यायभूषण तथा विज्ञापन द्वारा सहयोग व अनुदान देने

वाले सभी बन्धुओं का मैं अत्यन्त आभारी हूं जो दीपावली के शुभ पर्व पर यह जन कल्याणार्थ पुस्तिका प्रकाशित करने में हम सफल हों सके

आशा व पूर्ण विश्वास है पाठक इस महत्वपूर्ण पुस्तक को भारत के घर घर में पहुंचाने में सक्रिय योगदान देंगे ।

प्रचारार्थ व विक्रयकर्ताओं को विशेष रिआयत मूल्य पर मिल सकेगी पत्र व्यवहार द्वारा संपर्क स्थापित करें ।

आपका ही विनम्र
पं० छगनलाल कश्यप
(कश्यप भवन)
आना सागर कृष्णगंज, अजमेर

राष्ट्रीय प्रार्थना

ओं आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् ।
आराष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्यो तिव्याधी महारथो जायताम्,
दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णूरथेष्ठाः
सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्,
निकामे-निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्योनऽ ओषधयः
पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ (यजु० अ० २२ । मं० २२)

भावार्थ—ब्रह्मन् ! स्वराष्ट्र में हो द्विज ब्रह्म तेज धारी ।
क्षत्रिय महारथी हो, अरिदल विनाशकारी ॥
होवे दुधारु गौवें, पशु अश्व आशुवाही ।
आधार राष्ट्र की हो, नारी सुभग सदा ही ॥
बलवान सभ्य योधा, यजमान पुत्र होवे ।
इच्छानुसार वर्षे, पर्जन्य ताप धोवे ॥
फल फूल से लदी हो, औषध अमोघसारी ।
हो योग क्षेमकारी, स्वाधीनता हमारी ॥

—डा० सूर्यदेव जी शर्मा
एम. ए. पी. एच. डी. अजमेर

परिवार नियोजन राष्ट्रीय संकट है

वर्तमान में हमारी कांग्रेस सरकार देश में सन्तति निरोध आन्दोलन बड़ी ही तीव्रगति के साथ चला रही है, इस पर लाखों ही नहीं अरबों रुपया विदेशी कर्ज लेकर खर्च किया जा रहा है। परन्तु इस कार्य में सफलता मिलनी चाहिए थी, अभी तक वह पूर्ण नहीं हो पाई है। यद्यपि इस योजना को सफल बनाने के लिए निरन्तर प्रयत्न किये जा रहे हैं,

भौर अनुचित प्रलोभन भी दिये जा रहे है, परन्तु हिन्दुओं के अतिरिक्त ईसाई, मुसलमान इस सरकारी योजना में बिलकुल रुचि नहीं ले रहे है

इसका परिणाम भविष्य में भारत के लिए अत्यन्त हानिकारक होगा। अभारतीय विधर्मी प्रजा की वृद्धि होगी और वास्तविक भारतीयों की संख्या कम होगी इस बार की जनगणना में हिन्दुओं की संख्या कम हो गयी है। और ईसाई मुसलमान की संख्या बढ़ गई है, यही बात नहीं वर्तमान में लगभग दो तीन हजार ईसाई नित्यप्रति बनाये जा रहे हैं। हजार दो हजार यवन जबरदस्ती बनाये जाते हैं, यदि यही दशा रही तो इसका परिणाम आर्य हिन्दुओं के लिये कितना भयंकर होगा यह विचारशीलों के लिए अति चिन्तनीय है।

हम भी भारत की बढ़ती हुई जनसंख्या के दुष्परिणाम से अपरिचित नहीं है, परन्तु देखा जाता है कि देश में तन क्षीण मनमलीन और निस्तेज, बुद्धिहीन, कायर और कमजोर संताने आज प्रतिदिन बढ़ते जा रही है भिक्षा वृत्ति, से जीवन यापन करने वाले साधु सन्यासियों के भेष में भिखारियों की संख्या करीबन ५० लाख के अन्दाज बताई जाती है, उन्हीं रोगी महारोगी माताओं के साथ पाँच पाँच सात सात बालक बालिकायें देखे जाते हैं, जो अपना ही भरण पोषण नहीं कर पाते हैं, वे कैसे इन बालकों का पोषण कर पायेगें। इस ओर हमारी सरकार का ध्यान अभी तक नहीं गया है। अतः ओर सरकार को अवश्य कदम बढ़ाना चाहिए।

लेकिन वास्तविक जिन सदगृहस्थियों के तीन सन्तानें होगई उन्हें अनिवार्य वंधिहा (नसबंदी) बनाने का कानून हमारी सरकार बनाने जा रही है, जिन भारतीय परिवारों में प्रायः देखा जाता है कि पाँचवी सन्तान से दसवीं सन्तान वाली सन्तति महान तेजस्वी गुणवान महापुरुष

पैदा हुए हैं। तब आगे न मालूम किस परिवार में पुन: भगवान राम व कृष्ण, महाराणा प्रताप या छत्रपति शिवाजी अथवा महर्षि दयानंद, विवेकानंद या महात्मागांधी, नेताजी सुभाष, सरदार पटेल लालबहादुर शास्त्री वीर भगतसिंह, आजाद जैसे महान क्रांतिकारी वीर सावरकर और संगठन सम्राट डाक्टर हेडगेवार व डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी जैसी आत्मायें पैदा हो जाय।

"परिवार नियोजन व गाँधीजी"

सन्तानवृद्धि रोकने के विषय में महात्मा गांधी ने भी अनेक बार लिखा और अपने उपदेशों में कहा भी परन्तु वर्तमान में जिन कृत्रिम साधनों से यह कार्य किया जाता है, जिनको पाश्चात्य देशों के वैज्ञानिकों ने संसार की बढ़ती हुई जनसंख्या को रोकने के लिए प्रचलित किये परन्तु ये कृत्रिम उपाय व साधनों से विलासिता की मात्रा बढ़ेगी और इसका परिणाम होगा व्यभिचार का अधिक बढ़ना, और भावी शासक और प्रजा के लिए नितांत अनिष्ट और घातक होगा यह विचारणीय बात हैं।

पूजनीय जगदगुरु शंकराचार्य जी महाराज से प्रश्नोत्तर में दी गई महत्त्व पूर्ण चेतावनी

अभी कुछ दिन पूर्व ग्राम पिलखुवा में भारत के सुप्रसिद्ध सनातन धर्म के महान आचार्य पूज्यपाद श्रीमद् जगदगुरु शंकराचार्य गोवर्धन पीठाधीश्वर अनन्त श्री विभूषित श्री स्वामी निरंजनदेव तीर्थ जी महाराज कृपा कर पधारे थे। परिवार नियोजन के संबंध में जो उस समय आपसे प्रश्न किये गये, और श्री महाराज ने जो महत्वपूर्ण उत्तर दिये। वह यहाँ दिये जा रहे हैं। आशा है, पाठक उन्हें बड़े ही चाव से ध्यानपूर्वक पढ़ने की कृपा करेगें और पूज्य श्री आचार्य चरण के चेतावनीमय सदुपदेशों पर ध्यान दे आर्य हिन्दूसमाज को जड़मूल से ही समाप्त करने वाले इस परिवार नियोजन के चक्कर में हिन्दु जाति को बचाने का महान पुण्य का कार्य कर धर्मप्रेम व्यक्त करेगें ऐसी पूर्ण आशा है।

श्रद्धालु भक्तों द्वारा महाराज से प्रश्न ?

प्रश्न—

पूज्य महाराज श्री आजकल दिनरात अहिंसा की दुहाई देने वाली यह वर्तमान अयोग्य सरकार परिवार नियोजन का बड़े जोर शोर से खुल करके प्रचार कर रही है और करोड़ों रुपया इसमें खर्च कर रही है अर्थात् फूंक रही है। और लाखों हिन्दू अपनी नसबंदी (बधिया) बनाये जा रहे हैं, इधर स्त्रियों के भी खूब लूप नाम का उपकरण लगाने का प्रचार किया जा रहा है जिससे सन्तान पैदा न हो। गर्भपात कराने की खुली रेट दी जाती है। और भ्रूणहत्या को भी खूब प्रोत्साहन और रिश्वत देकर एजेन्टों द्वारा धन लुटाकर अनजान भारतीयों को यह महापाप करने को बरगलाया जाता है। आप श्रीमान इस कुकृत्य को कैसा समझते हैं ?

श्री महाराज का उत्तर—

यह परिवार नियोजन हिन्दू जाति और भारतवर्ष के सर्वनाश का लक्षण है और यह इस महान हिन्दू जाति को जड़मूल से मिटाने के लिए योजना बद्ध किया जा रहा है। हमारे धर्मशास्त्रों में गर्भपात कराना और भ्रूणहत्या बड़ा ही घोर पाप माना गया है। पर यह आज दिन रात अहिंसा की दुहाई देने वाली कांग्रेस सरकार उसी महान घोर पाप को खुल करके कर रही है क्या कहा जाय इस कांग्रेसी सरकार की इस युक्ति को ? एक ओर सब को अण्डे, मुर्गे, मांस मछलियां आदि जैसे घोर तामसिक अभक्ष चीजें खाने का प्रचार करना और सब को अंग्रेजी जैसी म्लेच्छ भाषा अनिवार्य पढ़ाना सूर्य उदय होने के पूर्व तीस हजार गौ माता के कण्ठ पर छुरी चलाना और देश में सिनेमा की भरमार करना और कामोत्तेजक पदार्थ खिलाकर बुद्धि भ्रष्ट करना और रेड़ियो के द्वारा गली गली में गन्दे गन्दे गानों का प्रचार करना और इस प्रकार सबको व्यभिचारी बनाने की भट्टी में झोंक करके सबको दुराचारी व व्यभिचारी करने की खुली छूट देना और सहशिक्षा द्वारा जवान जवान लड़के लड़कियों को सांस्कृतिक कार्यक्रम के नाम पर ठुमक ठुमक कर तकाना ठुकने बाजी कराना और कामी कीड़े :बनाना और दूसरी तरफ परिवार नियोजन के द्वारा बच्चों को न होने देना और अन्दर ही अन्दर इंजेक्शनों द्वारा मार डालना यह इनका (सरकार का) राक्षसीय कृत करना नहीं तो क्या है ?

पहले हमारे देश में यह मनुष्य बड़ा ही भाग्यशाली माना जाता था कि जिस मनुष्य का बड़ा परिवार होता था और जिस मनुष्य के शूर वीर बलवान सन्तानें होती थी पर अब कहा जाता है कि सन्तानें कम पैदा करों, यह सरकार की बुद्धि भ्रष्ट होना नहीं तो क्या है ? यह मुसलमान तो परिवार नियोजन की योजना को मानने का तैयार नहीं और वो करेगे भी नहीं, वह तो अपने मुसलमानी धर्म के खिलाफ कोई

भी कार्य करना नहीं चाहते और गुनाह समझते हैं। अब रहे बिचारे हिन्दू, सो उन पर इन कांग्रेसी नेताओं के चक्कर में दवाब में फंसकर नसबंदी कराकर :कम सन्तान पैदा करेंगे जिसका आगे जाकर के महान घोर भयंकर दुष्परिणाम यह होगा कि यह मुसलमान तो इस देश में बहुत बढ़ जायेंगे और हिन्दू बहुत कम रह जायगें और फिर यह मुसलमान एक नया पाकिस्तान की मांग करेगें और हिन्दू धीरे धीरे समाप्त हो जायेगें। हिन्दुओं को चाहिए वह सन्तानोत्पत्ति में इन मुसलमानों से कड़ी प्रतियोगिता करें ताकि इस देश में जन्म दर में अनुपात बना रहे। कुरान के अनुसार मुसलमान चार चार वैध पत्नियाँ रख सकता है। यदि प्रत्येक पत्नी के एक संतान भी हो तो हर मुसलमान की औसत चार सन्तानें होगी। इस प्रकार अगले १०, १५ सालों में यह पाकिस्तान सारे भारत पर ही अपना दावा करने लगेगा तो आश्चर्य न होगा। दूसरी ओर हिन्दू कोड बिल के दबाव में हिन्दू कानूनी रूप से एक ही पत्नी रख सकेगा और इस परिवार नियोजन के चक्कर में फंसने के कारण और पुरूष नसबन्दी (बधिया) के कारण हिन्दूओं की औसत जन्म दर गति धीमी रहेगी जिसका आगे जाकर परिणाम यह होगा कि यह हिन्दू समाज रूपी वृक्ष समाप्त हो जायगा।

इस कांग्रेसी सरकार का बस एक मात्र उद्देश्य हिन्दू कोड बिल और तलाक बिल के द्वारा और अब इस परिवार नियोजन के माध्यम से अथवा किसी प्रकार से इन हिन्दू जाति का हिन्दू समाज का धर्म सभ्यता का हिन्दू संस्कृति का सर्वनाश करके छोड़ना है। अन्य अनेकों उपायों के साथ २ यह परिवार नियोजन भी हिन्दुओं के सर्वनाश करने का ही एक साधन है। हिन्दुओं को चाहिये वह भूल कर भी इस परिवार गर्भपात, और भ्रूण हत्या जैसे नियोजन महापाप कर्म के चक्कर में न फंसे और इसका डटकर घोर विरोध करे सबको सावधान करें इस शुभ कार्य में तन मन धन द्वारा सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें, यही मेरी हिन्दू

समाज को सामयिक चेतावनी व आदेश है।

उपरोक्त विचार पूज्य जगद्गुरु शंकराचार्य जी महाराज के आदेशानुसार प्रत्येक हिन्दू परिवार को सावधान करने का परम कर्तव्य है जो प्रत्येक राष्ट्र प्रेमी को करना है।
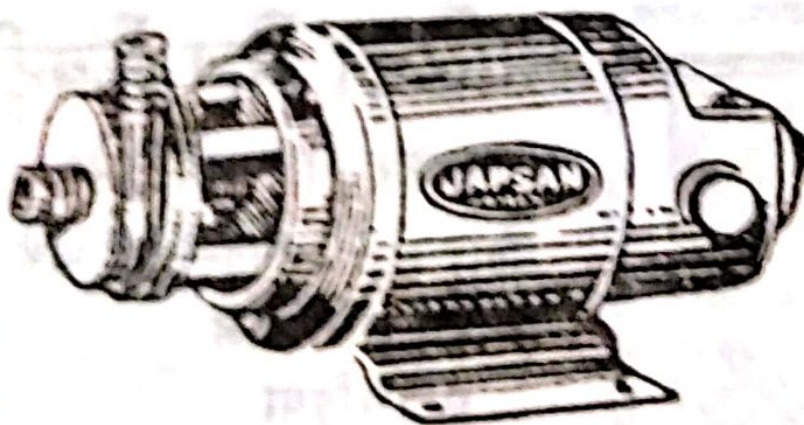
परिवार नियोजन पर सर्वोदयी नेता सन्त विनोबा भावे के विचार

यहाँ मुझे पूछा गया कि परिवार नियोजन का सरकार कितना आग्रह कर रही है। इसके बारे में आपकी क्या राय है। वास्तव में मुझे कबूल करना चाहिए। मैं समझ नहीं पाता कि यह क्या तमाशा हो रहा है! हिन्दुस्तान में हर वर्ग मील के लिये ३०० जनसंख्या हैं तो जापान में एक हजार। फिर हिन्दुस्तान में अधिक जनसंख्या है ऐसा क्यों माना जाता है क्या यह पुरुषार्थ का विषय है? आज हिन्दुस्तान में ज्यादा लोग है और उनके पोषण का कोई इन्तजाम नहीं हो पाता, यही तो सवाल है। आखिर यह सामाजिक और आध्यात्मिक विषय है। किन्तु इन दिनों यही चलन है कि कृत्रिम रीति से परिवार नियोजन किया जाय और विषय वासना बढ़ने पर कोई पाबन्दी न रखा जाय।

तालीम और नैतिकता बढ़ायें

आज यह सारा भूत दया के नाम पर चल रहा है और बड़े बड़े परोपकारी भी इसके लिये अनुकूल हैं वे सोचते हैं कि जब तक ऐसी युक्ति न की जायगी। बहनों को भाइयों के हाथ से मुक्ति न मिलेगी। किन्तु हम मानते हैं कि बहनों में ही इतनी योग्यता क्यों न हो कि वे नाहक आक्रमण न होने दें। यह जो ख्याल रूढ़ हो गया है कि पत्नी को हमेशा पति के वश में रहना चाहिये, वह बड़ा ही गलत है बहनों को इस बारे में अच्छी तालीम मिलनी चाहिये और उनकी नैतिकता बढ़नी चाहिये। खेत में एक सामान्य बीज बोया जाता है, तो किसान उसकी कितनी चिन्ता करता है। मान लीजिये कि कोई किसान मृग नक्षत्र में बीज बोने के बदले मई में बाये, जबकि जमीन जल रही हो, तो उसे क्या कहा जायेगा? अगर वह कहे कि मेरा प्लानिंग चल रहा है और मैं चाहता हूं कि बीज न उगे तो आप उसे 'नेशनल वेस्टेज', (राष्ट्रीय अपव्यय) समझेंगे। इसी तरह मनुष्य के बीज का इस्तेमाल हो और उससे कोई फल निर्माण न हो, इसके कोई मानी नहीं है। कोई भी वैज्ञानिक कहेगा कि निष्फल क्रिया न होनी चाहिये। लेकिन आज के वैज्ञानिक इतने दीन हो गये हैं कि वे सोचते ही नहीं। जब मनुष्य के जीवन में वैज्ञानिक दृष्टि आयगी तो वह कहेगा कि कोई भी क्रिया निष्फल न होनी चाहिये। तब वह जिस क्रिया में पौरुष का संवंध आता है उसे तो बिलकुल निष्फल होने देगा। इसलिये यह सारा विषय हमारी समझ शक्ति के बाहर चला गया है।

पुरुषार्थ और संयम-वृद्धि ही उपाय

खुशी की बात है कि हिन्दुस्तान की जनता में परिवार नियोजन का यह विचार फैल न पायगा। जिस तरह यह विचार करते हैं, उस

तरह से उन्हें बचाने के लिये और बात करनी होगी। दुनियाँ का अनुभव है कि जब जीवन में पुरुषार्थ बढ़ता है तब विषय वासना कम होती है सबको अच्छी तरह पुरुषार्थ करने का मौका मिलेगा। तो स्वभावतः विषय वासना पर नियत्रंण हो जायगा। साथ ही हिन्दुस्तान का पुरुषार्थ जितना बढ़ेगा उतना ही पोषण का इन्तजाम भी बढ़ेगा जहाँ पोषण अच्छी तरह नहीं मिलता वहाँ भोग वासना बढ़ती है। जानवरों में भी यह देखा गया है। मजबूत जानवरों में विषय वासना कम होती है। और कमजोर में ज्यादा, फिर कमजोरों की जो सन्तान पैदा होती है, वह भी निर्जीव या निकम्मी होती है। इस लिये कहता हूं कि यह विषय सामाजिक और आध्यात्मिक है उससे खिलवाड़ न किया जाय, ऐसा वातावरण निर्माण, किया जाय, जो संयम के अनुकूल हो। समाज में पुरुषार्थ बढ़ायें साहित्य सुधारें और गंदा साहित्य गन्दे सिनेमा पर अविलम्ब रोक लगा दें।"

सार्वजनिक प्रवचन में
पेद पाडु (कर्नूल)
दि० १३-३-५६.

प्राचीन आश्रम व्यवस्था

हमारे हिन्दू समाज में आश्रम व्यवस्था के अनुसार प्रारंभ से ही ब्रह्मचर्य व्रत में सन्तान उत्पति करना वर्जित है हमारी सामाजिक व्यवस्था में प्रथम बालकों को न्यून से न्यून २० पच्चीस वर्ष ब्रह्मचर्य आश्रम द्वारा सिर्फ विद्याग्रहण करने हेतु अविवाहित रहने का धार्मिक नियम है दूसरा ग्रहस्थ आश्रम में ही उत्तम सन्तान उत्पति करते अपने आयु के पचास वर्ष बाद तीसरा वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा लेना अपना पुण्य कर्म समझते हैं। तदन्तर मन तथा आत्मा में पूर्ण वैराग्य का अभ्यास होने पर सन्यास आश्रम की दीक्षा लेते पूर्ण परिव्राजिक जीवन बिताने की हमारी भारतीय संस्कृति की परिपाटी है।

गृहस्थ आश्रम में भी संयम और सदाचार के नियमों को ध्यान में रखते सन्तानोत्पति करने का आदर्श अपने स्वयं के जीवन में देने के अनेक उदाहरण हमारे इतिहास में मिलते हैं। उदाहरणार्थ योगीराज भगवान कृष्ण चन्द्र आनन्दकन्द को बहुपत्नियों का आक्षेप पौराणिक ग्रन्थों में मिलते हैं परन्तु महाभारत सौतिक पर्व अ० १२-३० में स्वयं भगवान श्री कृष्ण ने अपने आपको एक पत्नी व्रती और वह भी केवल रूक्मिणी को अपनी भार्या धर्मपत्नि घोषित करने का प्रमाण इस निम्न श्लोक में मिलता है।

योगीराज श्री कृष्ण की अपने चरित्र संबंधी घोषणाः—

ब्रह्मचर्यं महद् घोरम्, तीर्त्वा द्वादश वार्षिकम् ।
हिमवत्पार्श्वमास्थाय, यो मया तपसार्जितः ॥
समान व्रत चारिण्याम्, रुक्मिण्या योऽन्वजायत् ।
सन्तकुमारः तेजस्वी, प्रद्युम्नो नाम मे सुतः ॥

भावार्थ—श्री कृष्णजी रूकमणी ही विवाहिता धर्म पत्नी थी उनसे ही प्रद्युम्न जैसा वीर पुत्र उत्पन्न हुआ जो सौन्दर्यशील और गुणों में अपने पिता का ही प्रतिरूप था ऐसी उत्तम सन्तान प्राप्त करने के लिए महाराज १२ वर्ष ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया और हिमालय पर्वत पर रहकर घोर तपस्या की थी । श्री कृष्ण जेसा संयमी और तपस्वी का उदाहरण संसार के इतिहास में अन्यत्र नहीं मिलेगा ।

यह हमारे सामाजिक संयम और सदाचार व चरित्रवान के जागते चित्र हैं लेकिन आज पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव में युवक युवतियों का ब्रह्मचर्य व्रत को नष्ट किया जा रहा है परन्तु आधुनिक सन्तति निरोध के कृत्रिम उपकरणों का उपयोग उन गृहस्थियों के जिनके बहुत सन्तानें हो रही हैं ।

लेकिन प्रायः अधिकांश उन उपकरणों का उपयोग आज के कॉलेज विद्यार्थी अथवा विद्यार्थिनि वर्ग ही भारी मात्रा में करके अपने भावी जीवन को प्रायः सर्वनाश कर रहे है यह ब्रह्मचर्य रूपी अमृत को विषय वासना की भट्टी में योंही स्वाहा कर रहे हैं । इसका वास्तविक रहस्य समझाया तो वह अनुभव करेगें यह शरीर का सत्व को वह अपनी मूर्खता वश बरबाद कर रहे हैं । जैसे गन्ने का रस कोहलू से निकाल कर खाली थूथडा रह जाता है वैसे ही आज पाश्चात्य शिक्षा में दीक्षित विद्यार्थी वर्ग का हाल है ।

हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली में आदर्श गुरुकुल पद्धति का शिक्षण बालक बालिकाओं के लिये अति श्रेष्ठ व चारित्रवान बनाने वाली प्रणाली है। इस शिक्षण पद्धति की ओर हमारी राष्ट्रीय सरकार का ध्यान तक नहीं गया।

सन्तति निरोध पर आयुर्वेदिक चमत्कार पूर्ण प्रयोग

लेखक—रतनस्वामी वानप्रस्थ

हमारे आयुर्वेद भण्डार में तत्सम्बन्धी उसमें अनेक उपाय बताये गये हैं, प्राचीन काल में भी गर्भ निरोध के साधन प्रचलित थे। वे साधन आजकल के साधनों की भांति नहीं किन्तु अभीष्ट सिद्धि के लिए प्राचीन वैद्यराज प्रायः खाने की औषधियां दिया करते थे। तत्संबंधीय कुछ प्राचीन संस्कृत पुस्तकें यथा अनगरंग मंगयसाक कोकसंहिता रति रहस्य आदि ग्रन्थों में अनेक सिद्ध प्रयोग लिखे गये हैं। उनमें से कुछ नीचे दिये जाते हैं:—

आयुर्वेद ग्रन्थों के आधार पर सन्तति निरोध प्रयोग

१. तुषतो येन संकवाश्य मूलग्नि तरु, द्रुमम्।
पुष्पान्ते त्रिदिनं पीतं बन्ध यत्वं नयते ध्रुवम्॥

भावार्थः—मासिक धर्म से निवृत्त होने के पश्चात् तीन दिन तक स्त्री को चावल के धोवन के पानी के साथ पकाया हुआ चित्रक औषधि का काढ़ा सेवन करने से सन्तान पैदा नहीं होती है।

२. जो स्त्री मासिक धर्म के चौथे से तीन दिन तक कदम्ब वनस्पति का काढ़ा पीयेगी उसके सन्तान नहीं होगी यह सरल प्रयोग है।

३. जो महिलायें रजो धर्म के चार दिन बाद इन्द्रायण औषधि के

जड़ की पोटली बनाकर योनि स्थान में रात्रि के समय १२ दिन रखेगी उसके गर्भ नहीं रहेगा लिखा है—

मूलं गवाद्या स्मर मन्दिरस्थं, पुष्पावरोधस्य वधं करोति ॥

४. जो स्त्री चित्रक औषधि की जड़ का चूर्ण एक तोला काली मिर्च चूर्ण दो मासा सुहागा का चूर्ण दो मासा हल्दी का चूर्ण दो मासा सुहाग इन सबको मिलाकर सोलह पुड़िया बनालो जिस दिन से मासिक धर्म प्रारम्भ हो एक एक पुड़िया पानी के साथ प्रातः सायं सेवन करें तो गर्भ नहीं रहेगा।

५. चित्रक जड़ी वाला योग बहुत लोग अनुभव से बताते हैं कि लाल चित्रक की जड़ इस कार्य के लिए बहुत उपयोगी मानी जाती है। देशी दवाईयां इसकी पोटली बनाकर स्त्री के मासिक धर्म के बाद गुप्तांग में रखती है जिससे संतान नहीं होती है।

६. श्रीपल एक तोला, वायविडंग, एक तोला, चोकिया सुहागा एक तोला इन सब को कूट पीसकर छान लो तीन मासा चूर्ण प्रातः सायं गाय के दूध के साथ मासिक ऋतु के समय में सेवन करें तो गर्भ नहीं रहेगा।

७. एक प्राचीन आयुर्वेद ग्रन्थ में लिखा है—

यावन्ति पत्राण्युषितानि तोये पिवेद्य बालाप्यथ चम्पकस्य।
तावन्ति वर्षाणि न पुष्यामेषा लभेयथा कामरति प्रसक्ता ॥

अर्थात्—चम्पा के जितने पत्तों को रात में जल में भिगोकर प्रातः उसी जल में घोटकर ऋतु के दिनों में चार दिन पिवे तो उतने ही वर्ष तक स्री के गर्भ नहीं रहेगा।

८. पलाश के बीजों को पीस कर गाय के घी में और शहद में मिला कर गुप्तांग में रखा जावे इसी प्रकार कड़वे तेल में नमक मिला कर रखने से भी गर्भ नह रहता है।

९. धरणी की जड़ को चावलों के पानी के साथ पीने से भी गर्भ नही रहता इत्यादि और भी कई चमत्कारी अद्‌भुत प्रयोग हैं जिससे बिना किसी प्रकार की हानि के सन्तति निरोध का कार्य बड़ी सरलता से हो सकता है।

आयुर्वेद चिकित्सा द्वारा संतान प्राप्ति

लेखक—आचार्य पं० भद्रसेन जी

१. देशी नील का बीज एक छटांक, हींग असली एक छटांक, सन का बीज एक छटांक, गुड़ तीन तोला इन औषधियों को अलग २ कूट पीस कर तथा गुड़ मिला कर बेर के बराबर गोलियां बनालें। जब स्त्री रजस्वला हो तो निम्नलिखित औषधि सेवन करावें—नक छिकनी बूटी काढ़ा एक तोला बढ़िया गुड़ दो तोला तीन छटांक जल में औटावे। जब आधा जल शेष रह जावे तब मलकर छान कर स्त्री को पिलावें। सात रोज तक दिन में दो बार इसका सेवन करावें। प्राकृतिक चिकित्सा में लिखे अनुसार हरी पत्ती की सब्जी तथा फलों आदि का भी सेवन करावें, फिर उपर वाली गोली ठण्डे जल से एक माह तक प्रतिदिन खा लिया करें। गोलियों के सेवन काल में स्त्री सहवास बिलकुल न करें। परिपूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत से रहते जब स्त्री फिर रजस्वला हो तब प्रातःकाल तो वही दो गोली ठण्डे जल के साथ और सायंकाल वही गुड़ और नक छिकनी का काढ़ा सात रोज तक देकर दवा बन्द कर दें। फिर सातवें, नवमें, तथा सोलहवें दिन रात्रि में ही गर्भाधान करें। ईश्वर कृपा और इस आयुर्वेद प्रयोग से गर्भ रहकर सन्तान रत्न का जन्म होगा।

२. शिवलिंगी के ६ बीज एक घूंट गाय के दूध के साथ ऋतु स्नान के पश्चात सात दिन तक खाकर समागम समराशि में करने से गर्भ रह कर पुत्र रत्न जन्म होगा।

इसके अतिरिक्त सन्तान प्राप्ति के प्रयोग श्रद्धेय आचार्य पं० भद्रसेन की लिखित कठिन और असाध्य रोगों की—

यौगिक, प्राकृतिक तथा आयुर्वेदिक चिकित्सा पुस्तक में पढ़ें।

तत्सम्बन्धी भारत सरकार अपने आयुर्वेद विभाग संचालकों से भी परामर्श कर जनता को सरल और कम खर्चीले उपायों से जनता को लाभ पहुँचा सकती है। परन्तु सन्तति निरोध के कार्य को सम्पूर्ण भारतीय जनता है उन सब पर लागू करे न कि केवल एक पक्षीय हिन्दुओं को नष्ट करने का प्रयोग करें।

अन्यथा हमें तो ऐसा लगता है भारत विरोधी जितने पाश्चात्य देश है वह सब योजनाबद्ध भारत को गारत करनेप र अपने अरबों रुपया मदद देकर यह महा विनाशकारी योजना हमारी सरकार द्वारा करा रही है। इससे हम सबको अत्यन्त सावधानी से काम लेना चाहिये।

इस योजना की चलाने वाले कर्मचारी, अधिकारी जैसे बीमा एजेन्ट अपना व्यापार बढ़ाने के लिये लोभ लालच देकर अपना कार्य पूर्ण करते हैं। वैसे ही सरकारी डाक्टर को कमीशन, कम्पाउण्डरों को कमीशन, नर्सों को कमीशन, प्रयोग करने वालों को इनाम बहकाकर ले जाने वाले को भी अच्छा कमीशन, यह वास्तविक क्या तमाशा है।

इसको बुद्धिमान समझे तो मालूम होगा कि कुछ ही कागज के टुकड़ों के लोभ में देशधर्म और संस्कृति को नष्ट करने का महा पाप अपनी ही कहलाने वाली सरकार यह उपरोक्त रिश्वतें देकर करा रही है।

इससे सब भारतीयों को सावधान रहना चाहिये हम यह नहीं चाहते कि कीड़े मकोड़े की भांति सन्तानें हों हम तो संयम और सदाचार के द्वारा वीर बालक बालिकायें पैदा करने के पक्ष में है किसी कवि ने कहा है—

जननी जने तो ऐसा जने, कह दाता कह शूर।
नहीं तो रहीयो बांझ ही मति गमावे नूर॥

परिवार नियोजन का कार्य जिस प्रकार चलाया जा रहा है हिन्दू राष्ट्र को नष्ट करने का कुचक्र है

अंग्रेज भारत से गया, परन्तु ईसाई जाल की गृद्धदृष्टि इस पर लगी हुई है। वे नहीं चाहते कि भारतीय राष्ट्र बलवान और शक्तिशाली होकर संसार की बड़ी शक्तियों की पंक्ति में आ जाय।

इसके लिए कई चक्र चला रक्खे हैं। एक ओर ईसाई मिशनरी रात दिन इस प्रयत्न में लगे हुए हैं कि जैसे भी हो हिन्दुओं को ईसाई बनाया जाय, दूसरी ओर गोवंश का ह्रास कराने के लिए भांति भांति के उपाय कर रहे हैं। जिससे दूध दही आदि स्वास्थ्य वर्द्धक पदार्थ न मिले, और अण्डा, मछली का प्रचार हो जिससे सात्विक बुद्धि नष्ट हो जाय, वैदिक सभ्यता व संस्कृति के प्रति स्वभावत: दुर्भावना उत्पन्न हो जाय। इस ही क्रम में परिवार नियोजन का चक्र चलाया है। जिससे हिन्दुओं की संख्या घटती ही जाय। विदित रहे परिवार नियोजन में न तो ईसाई भाग ले रहे हैं न मुसलमान, यह चक्र केवल हिन्दुओं पर चल रहा है। परिणाम स्वरूप हिन्दुओं की संख्या घट रही है, और ईसाई और मुसलमान की जनसंख्या बढ़ रही है। यदि यही क्रम चलता रहा तो इसका परिणाम क्या होगा, प्रत्येक विचारशील अनुमान कर सकता है। दुख की बात तो यह है कि हमारी अपनी कही जाने वाली सरकार लोगों को प्रलोभन देकर रिश्वत देकर नसबन्दी कराने तथा लूप लगवाने की ओर आकर्षित कर रही है।

हमारे शास्त्रों ने ब्रह्मचर्य की बड़ी महिमा बताई है इसका प्रचार कराया जाय तो परिवार स्वयं नियोजित हो जावे, परन्तु इस ओर तो ध्यान ही, उलटे ऐसे साधन उपलब्ध किये जाते हैं जिससे नवयुवकों और नवयुवतियों के मस्तिष्क दूषित होते हैं फिर लूप लगाने व नसबन्दी कराने का प्रचार किया जाता है।

इस कुचक्र से प्रभु हिन्दू जाति की रक्षा करे।

—पं० भगवान स्वरूप न्यायभूषण

नसबन्दी व लूप लगाओ जीवन सुखी बनाओ

सरकार द्वारा परिवार नियोजन प्रदर्शनियों में उपरोक्त शीर्षक के बोर्ड तथा लाउडस्पिकर पर भांति भांति की घोषणा प्रसारित की जाती है उसका अबोध बालक बालिकाओं पर अत्यन्त बुरा असर पड़ता है।

एक परिवार नियोजन प्रदर्शनी में एक दम्पति आयु तीस पैंतीस करीबन के देखने जाते हैं। साथ में एक १२ वर्षीय कन्या दस वर्षीय बालक भी जाता है प्रदर्शनी में सर्व आकर्षण कक्ष देखते जब उपरोक्त सूचना पट "नशबन्दी व लूप लगाओ अपना जीवन सुखी बनाओ" पढ़ते हैं तो अविवाहित अबोध बालक पिता से कहता है मैं भी नशबन्दी कराऊंगा, बालिका भी माता से बड़ी उत्साह से कहती है माता जी माता जी मैं भी लूप लगवाऊंगी। यह प्रकरण मनोरंजन अवश्य है कारण इस संवाद को सैकड़ों दर्शकों ने देखा अबोध बालक बालिकाओं को क्या पता यह नसबन्दी, लूप क्या बला है ?

यह उपरोक्त प्रदर्शनी का व्यंग कथा सत्य है। एक बार बाल विवाह में भी प्राय उन अबोध बालक बालिकाओं को पता भी नहीं रहता कि विवाह संस्कार में क्या होता है। गांवों में नित्य प्रति ऐसे विवाह होते देखे जाते हैं जो विवाह सस्कार अर्धरात्रि तक चलते रहते हैं जब यज्ञबेदी की प्रदक्षिणा (फेरा) लेने का समय होता है तब उन बच्चों को निद्रा से जगाया जाता है कि उठो उठो "फेरा खालो तब बालक निद्रा में ही बोलते अभी नींद आ रही है 'पेड़ा' सुबह ही खालूंगा अभी पेंडे आपही याने (मां बाप) खालों उन बच्चों का भी क्या दोष जो अज्ञानता वश अपने मां बाप, को परिवार नियोजन प्रदर्शनी में निसंकोच सेकड़ों दर्शकों के सामने ही हठ करते हैं कि हम भी नसबंदी और लूप लगावेंगे इत्यादि।

परिवार नियोजन संग्राम

[संसार की जन संख्या जिस तेजी के साथ बढ़ रही है यदि इसे रोकने का उपाय न किया गया तो निकट भविष्य में बड़े भारी संकट का सामना करना पड़ेगा। यह आवाज हमारे भाग्य विधाताओं ने जोर से उठा रक्खी है, और इसके लिए संसार में और कहीं नहीं परन्तु भारत में पुरुषों के नपुंसकीकरण और महिलाओं के बन्ध्याकरण का अभियान तेजी से चला रखा है, जिस पर लाखों नहीं करोड़ों रुपये हमारी सरकार व्यय कर रही है। आयुर्वेद शिरोमणि श्री पं० ब्रह्मानन्द जी त्रिपाठी के सम्पादकत्व में प्रकाशित होने वाले 'स्वास्थ्य' पत्रिका में सम्पादकीय लेख उपरोक्त शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। जिसमें विद्वान् लेखक ने पूर्ण योग्यता पूर्वक इस परिवार नियोजन के सम्बन्ध में आलोचना की है। यही लेख परोपकारी के सन् १९६७ के अंक जुलाई में प्रकाशित हुआ है। हम वहीं से इस लेख का महत्व पूर्ण भाग उद्धृत कर रहे हैं। — संग्रहकर्ता—कश्यप]

कई वर्षों से भारत के पत्रों में परिवार नियोजन की चर्चा एक आवश्यक और अनिवार्य विषय बन गई है। इसके विषय में किसी न किसी विशेषज्ञ का विस्तम्भित कर देने वाला वक्तव्य प्रायः प्रतिदिन ही प्रकाशित होता रहता है, जिसमें कि कुछ वर्षों में भारत और संसार की जन संख्या की वृद्धि के सम्बन्ध में रोचक और साथ ही आतङ्क फैलाने वाले अङ्क और कल्पनाएं बड़े सुन्दर ढंग से दी जाती है। साथ ही जन संख्या वृद्धि के इस भावी महा विस्फोट से होने वाले सु महान् आतङ्क से बचने के लिए त्रस्त मानव को परिवार नियोजन की शरण के आने की सलाह दी जाती है।

अभी तक भारत में परिवार नियोजन को एक अभियान का रूप ही दिया जा रहा था परन्तु गत देश व्यापी निर्वाचन के बाद श्री डा० एस० चन्द्रशेखर द्वारा केन्द्रीय स्वास्थ्य तथा परिवार नियोजन के मन्त्री पद ग्रहण करने के अनन्तर इस कार्य को और भी अधिक तीव्रता से बढ़ाने का नवीन तथा बलवान् प्रयास प्रारम्भ हुआ है। जिसको देखते हुए यही कहना उचित होगा कि इस अभियान ने अब 'सर्व सम्पूर्ण लक्षण' संग्राम का रूप ले लिया है।

अभी हालत में ही—जून के तृतीय सप्ताह में दिल्ली के एक प्रसिद्ध दैनिक के प्रतिनिधि से हुई भेंट में डा० चन्द्रशेखर ने बताया है कि "जन

संख्या की समस्या एक कठिन तथा आत्ययिक समस्या है। अभी तक सम्पूर्ण हृदय से हमने इसके समाधान के लिए अपने आपको समर्पित नहीं किया था। परन्तु अब इसके समाधान के लिए अनेक दिशाओं से आक्रमण प्रारम्भ कर दिया गया है जैसा कि सुविदित है सरकार जन्म संख्या को ४० प्रति सहस्र से घटाकर, यदि २० प्रति सहस्र नहीं तो २५ प्रति सहस्र पर प्रति वर्ष पर लाना चाहिती है। यह कार्य हम पहिले सरकार से ही प्रारम्भ कर रहे हैं।'

विशेषज्ञों का कथन हैं कि भारत में प्रति मिनिट २१ शिशु जन्म लेते हैं। प्रति १५ मिनट में ३१५ और प्रति दिन १५००० और वर्ष में एक करोड़ बीस लाख बालक जन्म लेते है। यह संख्या आस्ट्रेलिया की सम्पूर्ण जन्म संख्या के बराबर है। इस गति से बढ़ते रहने पर २८ वर्ष में भारत की जन संख्या एक अरब तक पहुंच जावेगी। आज सरकार देश को इस महती विभीषिका से बचाने के लिए सर्वात्मना प्रयत्नशील है।

परन्तु कुछ कटु अनुभव ऐसे हैं जो कि सफलता की इस हार्दिक कामना के रहते हुए भी सफलता में विश्वास नहीं जमने देते। हमारे देश के कार्य कर्ताओं ने, सरकारी अधिकारियों ने सफलता प्राप्त करने की एक नवीन सरल शैलो का विकास किया है। इस शैलो के अनुसार अधिकांश योजनाएं कागज पर बनती हैं और उनकी पूर्ति भी कागज पर ही होती है। कृषि भी कागज पर होनी है। आज यदि किसी धान की उपज का विस्तार कई लखों एकड़ में हों जाना है तो दूसरे ही दिन किसी भी कारण से कई लाख टन की कमी कभी भी कागज पर हो जाती है। शायद इस शैली की कमीयों को देख कर परिवार नियोजन के कार्य में कुछ ठोस कदम उठाये जा रहे हैं। डा० चन्द्रशेखर ने बताया है कि इस कार्य को सफल बनाने के लिए लोगों को प्रोत्साहनार्थ धन

आदि (Incentive) देने की व्यवस्था की जा रही है। उनका कहना है कि भारत सरकार सबसे अधिक व्यक्तियों की नौकरी देती है। इसके श्रम, सुरक्षा, रेलवे आदि मन्त्रालयों में बहुत लोग काम करते हैं। इन लोगों को परिवार नियोजनार्थ प्रोत्साहन देने के सम्बन्ध में अनेक योजना पर विचार किया जा रहा है। उदाहरणार्थ यदि कोई सरकारी कर्मचारी मन्त्रालय से कहे कि वह दूसरी सन्तान होने के बाद 'वैसेक्टॉमी' करा लेगा तो उसे वेतन में हम एक साथ दो इन्क्रीमेन्ट दे सकते हैं।

अभी तक जो सूचनाएं प्राप्त हैं उनके आधार पर यह स्पष्ट है कि यह परिवार नियोजन संग्राम आदि से अन्त तक सर्वात्मना 'प्रोत्साहन धन' (Incentive) पर ही निर्भर है। इसके अनुसार डाक्टरों को बाहर जाने के लिए, ऑपरेशन करने के लिए, लूप लगाने में लिए यों कहिए सभी सम्बद्ध कार्यों को करने के लिए प्रोत्साहन धन देने की पृथक व्यवस्था है। जो लोग दम्पतियों को ऑपरेशन कराने आदि के लिए प्रेरणा देते हैं उन्हें भी प्रत्येक कार्य के लिए प्रोत्साहन धन (दलाली) देने की सुविधा है। जो आपरेशन करावें, या लूप लगवावें उनको भी आर्थिक प्रोत्साहन देने का समुचित प्रावधान है। ऐसी स्थिति में यदि इस योजना को 'प्रोत्साहन योजना' (Incentive Plan) कहा जावे तो अधिक उपयुक्त होगा।

सुना जाता है कि जब रानी सेमिरेमिस ने भारत पर आक्रमण किया तो हाथियों की संख्या के आधार पर सेना के बल का अनुमान लगाने वाले भारतीयों को प्रतिकृत करने के लिए उसने ऊटों के उपर चर्म के खोल चढ़वा कर उनमें भुस आदि भरवा उन्हें हाथी का रूप देकर रणक्षेत्र में सजाकर खड़ा किया। परन्तु जैसे ही भारतीय वीरों के बाण ऊटों से लगे, वे डकराते हुए इतस्ततः पड़ गई। 'प्रोत्साहन' को देकर परिवार नियोजन संग्राम को जीतने के भारत सरकार के मनसूबों

को देख कर हमें रानी सेमीरेमिस केऊंटों कि स्मृति आ जाती है। उसने तो ऊंटों के शरीर को कृत्रिम प्रोत्साहन से परिपुष्ट करके इस संग्राम में विजय होने के स्वप्न देखती है।

साथ ही इस कृत्रिम प्रोत्साहन के विचार करने से भी ऐसा भाव होता है—कि इस योजना में स्वतः जैसे कोई सार ही न हो, कोई ऐसा उसमें आकर्षण और सत्य ही न हो जिसके आधार पर भारतीय मस्तिष्क को उचित कार्य करने के लिए प्रेरित किया जा सके। इसके अतिरिक्त जनता के मस्तिष्क बुद्धि और विचार शक्ति का भी यह नग्न अपमान है। जिस जनता से यह आशा की जाती है कि वह बालिग मताधिकार का उपयोग करके सर्वोत्तम कार्यक्रम वाले दल को अपना मत देकर जन सत्तात्मक आदर्श सरकार का निर्माण करेगी उसकी पैसों का लोभ देकर किसी कार्य को कराने का प्रयत्न करना उसके उपहास और अपमान के अतिरिक्त और क्या है?

इस प्रकार के प्रोत्साहन धन को उत्कोच, रिश्वत या घूंस ही कहना चाहिये। चाहे उसको देने वाली सरकार ही क्यों न हो। जो लोग सरकारी कर्मचारियों को घूंस देकर कार्य कराते हैं, उनके उस उत्साह को भी 'प्रोत्साहन धन' ही क्यों नहीं मानना चाहिये। कहने का तात्पर्य यह है कि इस प्रकार सम्बद्ध व्यक्ति को आर्थिक लोभ देकर जो इस योजना की सफलता की आशा की जारही है, वह एक भयङ्कर मृग मरीचिका है। साथ ही जनता के पसीने की कमाई के अरबों रुपयों का अत्यन्त चिन्ताजनक दुरुपयोग है। रङ्ग ढङ्ग को देखकर यह सहज ही भविष्यवाणी की जा सकती है कि 'भस्मनि हुतं' राख में किये हुए घृत के होम के समान यह सब प्रयत्न तथा धन नितांत निष्फल ही होने वाला है।

इस परिवार नियोजन समस्या का एक दूसरा पक्ष भी है। कुछ लोग, विशेषकर सरकार, उसको साम्प्रदायिक कह कर भी उसकी

उपेक्षा कर सकती है। परन्तु यह एक विश्वव्यापी दृष्टिकोण, केवल भारत से ही सम्बद्ध नहीं। जहाँ तक केवल भारत से ही ऐसे विषयों का सम्बन्ध है वहाँ तक भी यह देखा जाता है कि न चाहते हुए भी, धर्म निरपेक्षता का घोष करते हुए भी, उनमें साम्प्रदायिक दृष्टिकोण बलात् प्रविष्ट हो जाता है। एक पत्नि सम्बन्धी नियम बनने के अनन्तर एक सम्प्रदाय पर उसका कोई प्रभाव ही नहीं हुआ और दूसरे सम्प्रदाय या धर्म वालों पर उसकी अनिवार्यता बनी रही। आज यह जो परिवार नियोजन संग्राम है, उसका भी भारत में ऐसा ही रूप बन रहा है, क्योंकि अन्य मतावलम्बी उसको मान्यता देना ही नहीं चाहते।

श्री डा० चन्द्रशेखर ने वेटिकन् में पोप से मिलने के अनन्तर जो वक्तव्य दिया था, उसके विषय में प्रश्न उठने पर संसद् में सफाई देते हुए डाक्टर साहब ने कहा है—'पोप से भेंट करने का उद्देश्य यह जानना था कि हिज् होलीनेस पोप और कैथोलिक चर्च वैज्ञानिक जन्म निरोध के सम्बन्ध में कैथोलिक लोगों के लिए कुछ रियायत या ढील देने के विषय में विचार कर रहे हैं। हिज् होलीनस ने जो उत्तर मुझे दिया उसका तात्पर्य यही था कि वैज्ञानिक जन्म निरोध के विरोधी हैं और साथ ही गर्भपात के भी।"

इसका सीधा सा सारांश यह है कि समस्त संसार में जो जन्म निरोध का कोलाहल हो रहा और जिसके लिए ईसाई धर्मावलम्बी देश ही सबसे बढ़ चढ़ कर प्रचार कर रहे हैं उसके लिए धार्मिक मर्यादा में रहते हुए वे स्वयं उद्यत नहीं हैं। किसी समय संसार में बौद्धधर्मावलम्बियों की संख्या सबसे अधिक थी। परन्तु जिस गति से बौद्ध लोग ईसाई मत स्वीकार करते जा रहे हैं और जिस प्रकार साम्यवाद (कम्यूनिजम) के प्रभाव से वे धर्मनिरपेक्ष होते जारहे हैं उसे देखते हुए हमारा अनुमान है कि संसार में इस समय ईसाई मत के मानने वालों

की संख्या अन्य मतावलम्बियों की अपेक्षा कई गुना अधिक है। दूसरे शब्दों में सब का अर्थ यह है कि विश्व की जन संख्या वृद्धि के विस्फोट का जो भय दिखाया जारहा है उससे बचने के लिए संसार की सर्वाधिक जनसंख्या वाला वर्ग सहयोग देने से बच रहा है। ऐसी स्थिति में अन्य मतावलम्बी लोग यदि इस विभीषिका को यथार्थ मानकर जन्म निरोध के वैज्ञानिक रूप को स्वीकार कर परिवार नियोजन संग्राम में जुट जाते हैं तो वे अपने पैरों पर अपने आप ही कुल्हाड़ी मारते हैं। थोड़े समय में वे नगण्य अल्प संख्यक बन जावें तो इनमें आश्चर्य ही क्या है? वैसे भी आज आर्थिक प्रलोभन और संसार की अर्थहीन जनता की दुर्दशा के दुरुपयोग द्वारा ईसाई मत का विस्तार दिन दुना रात चौगुना हो रहा है। भारत उनके कटु फल का उपभोग शायद सर्वाधिक कर रहा है।

इस विचारधारा को वास्तव में साम्प्रदायिक कहना भी बड़ी भूल है। धर्म कोई विसाद का विषय नहीं है। किसी धर्म को मानने का अर्थ यही है कुछ लोगों ने अपने सहस्रों या सैकड़ों वर्षों के प्रयोगिक अन्वेषण के अनन्तर जीवन का जो सर्वोत्तम मार्ग ढूंढ़ निकाला उस पर विश्वास कर में तदनुकूल आचरण करना। इस प्रकार के धर्म के विलोप या प्रचार की हानि का अर्थ है उस विशेष वर्ग द्वारा युग युग के प्रयत्नों अनन्तर हुई अमूल्य उपलब्धि का विनाश ही होने की संभावना है।

आयुर्वेदाचार्य
पं० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

पूज्य स्वामी वीर राघवाचार्य जी महाराज
रामानुजाचार्य पीठाधीश्वर पुष्कर

शुभ सम्मति

ऋषीकेश
२७-१-६८

स्वधर्माचरण परायण श्रीमान कश्यपजी !

स्नेह मंगल कामना

आपका पत्र व "परिवार नियोजन राष्ट्रीय संकट" प्रकाशन मिला बड़ी प्रसन्नता हुई। आपका प्रयत्न प्रशंसनीय है। इस विषय में इधर से भी प्रचार जहाँ तहाँ चालू है।

आपका जीवन हम सदा से भारतीय संस्कृति की सेवा में संलग्न देखते आये हैं इससे हृदय में अपार संतोष है, ऐसे ही दृढ़ संकल्पी हिन्दू समाज के लिए जगह जगह कार्यरत हो यह आन्तरिक इच्छा है।

पुष्कर आने पर आप से मिलना होगा। आशा है आप सर्वाङ्ग सुप्रसन्न होंगे।

स्वामी वीर राघवाचार्य
आश्रम ऋषी केश,

परिवार नियोजन करा चुके हैं उनका अनुभव

इस परिवार नियोजन की आंधी में और कुछ रुपयों के लालच में जो सज्जन व महिलायें इस योजना का शिकार हो चुके हैं वह अत्यन्त परेशान हैं और दुख पा रहे हैं, इस पर सरकार द्वारा इतना प्रचार किया जा रहा है कि लोग स्वार्थवश या अज्ञानता में पुरुष नसबन्दी करा लेते हैं, महिलाओं द्वारा लूप नाम का उपकरण गुप्तांग में डाक्टरों द्वारा लगवा लिया जाता है।

कारण इस भ्रष्ट योजनाओं का जगह जगह चित्र प्रदर्शनी द्वारा सर्वमान्य नागरिकों को बताकर तो एक प्रकार का अनजान बालक बालिकाओं को व्यभिचार करने की शिक्षा का पाप हमारी सरकार कर रही है कारण सर्व प्रकार के कृत्रिम उपकरणों की जानकारी सर्वमान्य को प्रायः इन्हीं सार्वजनिक परिवार नियोजन चित्र प्रदर्शनी में कराया जाता है। उसमें कम आयु के युवक युवतियां ही यह शिक्षा लेकर जाते हैं यह कितनी लज्जा की बात है ?

परिवार नियोजन कराया हुआ वह प्रथम वर्ग है जो हम तो बरबाद हुए है अब सबको अपने जैसा करने में आनन्द मानने वाले जैसे किसी धूर्त की नाक कट गई उसने यह प्रचार चालू किया कि नाक कटाने से भगवान के दर्शन होते हैं कारण भगवान दर्शन में यह नाक ही आडी आती है लोग धड़ाधड़ अपनी नाक उस धूर्त के बहकाने से कटाने लगे पर दर्शन न होते तब यह गुरु मंत्र दे देता कि अब तुम भी यह प्रचार करो कि हमें भगवान के दर्शन हो गये। ऐसे हजारों लोगों को नकटा बना दिया।

और इस धूर्त के एजेन्ट चेले राजा के पास भी पहुँच गये राजा को तैयार कर दिया तब राजा के साथ हजारों अच्छे परिवार भी नाक

कटा भगवान के दर्शन करने के चक्कर में पड़ गये तब राजा के वृद्ध दीवान ने राजा से यह प्रार्थना की कि सरकार मैं आपका विश्वासी राजभक्त दिवान हूं आप मेरी बात मानिये। यह सब धूर्तों ने झूठा पन्थ चलाया है, आपके पहले मैं अपनी नाक कटवा कर परीक्षा करूं कि वास्तविक भगवान के दर्शन होते हैं क्या ? तब आप सबको मैं बता दूंगा, राजा दीवान की बात मान गये। बेचारे स्वामी भक्त वृद्ध दीवान ने परीक्षार्थ अपनी नाक कटाली परन्तु भगवान के दर्शन नहीं हुए और न उस धूर्त का झूठा गुरुमन्त्र दीवान पर लागू हुआ बल्कि उन धूर्तों व पांखण्डियों को कैद में बन्द करा कर राजा व जनता को सावधान किया।

इसी प्रकार कुछ सज्जन पुरुष व महिलायें अपनी परेशानी व उससे होने वाली हानियों से जनता को सावधान करते हैं। कई महिलायें तो लूप नाम का उपकरण लगाने के बाद रक्त प्रवाह व वेदना के कारण पुनः डाक्टरों व नर्सों की शरण में जाती हैं तब डाक्टर व नर्सों द्वारा मनमानी फीस यानी पचास २ रुपये देकर लूप को वापिस निकालने के उदाहरण सुनने में आये हैं। कई महिलायें यह भेद शर्म के मारे किसी को न बता कर मन ही मन रोती रहती है कुछ जानकार डाक्टरों का अभिप्राय है कि लूप कालान्तर में बहुत बड़ी बीमारी पैदा करता है।

अभी कुछ दिन पूव वर्तमान पत्रों में पढ़ा लूप लगाने के बाद भी गर्भ रह जाता है तब पति को संशय पैदा हो जाता कि मैंने तो नसबन्दी कराली तब पत्नि को गर्भ अन्य पुरुष से तो नहीं रह गया ? इसी प्रकार की अन्य बहुत सी परेशानियां व आपस की प्रेम गंगा की पावन धारा में संशय:रूपी विष फैल जाता है।

ऐसे अनेक विघातक कारणों को देखते यह परिवार नियोजन की कृत्रिम योजना से सावधान करने का महान कार्य पूज्य जगद्गुरु

शंकराचार्यजी महाराज के मार्ग दर्शनमय उपदेश और आर्य विद्वान श्री रत्न स्वामीजी वानप्रस्थ, आचार्य पंडित भद्रसेन जी द्वारा लिखित यौगिक प्राकृतिक तथा आयुर्वेदिक चिकित्सा द्वारा आयुर्वेद भण्डार से निरोध व वृद्धि पर चमत्कार पूर्ण प्रयोगों से जनता लाभ उठायगी। पाठकों से प्रार्थना करते हुए नम्र निवेदन है कि यह पुस्तक घर घर में पहुंचा कर पुण्य के भागी बनें यही भगवान से प्रार्थना है।

वर्तमान सरकार को भगवान पर विश्वास नहीं

ब्रह्म कवि बीरबल ने भी बादशाह अकबर को प्रभु विश्वास पर्यंबद निम्न, कवित में कितना सुन्दर उपदेश दिया है जिसे सुन कर अकबर दंग रह गया। हमारी सरकार के परिवार नियोजन मन्त्रीगण भगवान पर विश्वास कर पुरुषार्थ करें करावें तो यह कहने का मौका ही नहीं आवे कि जनसंख्या बढ़ रही है खाने का इन्तजाम नहीं होता इस लिए परिवार नियोजन द्वारा मानव हत्या भ्रुण हत्या का पाप हो न करना पड़े।

कवित्त

हे भगवान के प्यारों!

> अपने भरोसे ही यह जीवन है इसको भूल।
> कण कीड़ी, मण कुंजरा, अनल पंख गज पांच।
> मोती देत मराल को, रख प्रभुवर में सांच॥

अर्थात् 'उसी कर्त्ता-धर्त्ता-विधाता की कृपा से ही सब का जीवन चलता है, जानकर ही, गौ की सेवा-सत्कार में लगो। इसी पर लगभग चार सौ वर्ष पूर्व, राजा बीरबल 'ब्रह्म कवि' ने कहा था कि—

> जब दांत न थे, तब दूध दियो,
> जब दूध दियो, कहा अन्न न दे है।

जो जल में थल में, पशु पच्छिन की।
सुधि लै है सो तेरी भी लै है॥

ज्ञान को देत, अज्ञान को देत,
अहान को देत, सो तो को भी दै है॥

काहे को सोच करे मन-मूरख,
सोच करे कछु हाथ न ऐ है॥

यद्यपि द्रव्य को सोच करे,
पर गर्भ में के ते गांठ को खायो।

जा दिन जन्म लियो जग में,
तब केतिक कोटि लिये संग आयो॥

वा को भरोसो न छांड अरे मन,
जा सो अहार अचेत में पायो।

'ब्रह्म' कहे सुन शाह अकब्बर,
देख मेरो मन यों हुलसायो॥

गौ महिमा

धन्य धन्य है! धन्य धन्य है? गौ माता दूध ॥
यह गौ माता का दूध ॥

इसी दूध को पान कर के, हुए वीर महान् ।
इसी दूध को पी के बढ़े थे, राम कृष्ण भगवान ॥
गौ माता को शिर नवाँ कर, पाया आनन्द खूब ॥ १ ॥
यह गौ माता का दूध ।

स्वर्ग के रहने वाले इसके, दूध, दही, घृत खाते ।
तीन लोक में इसकी महिमा, के गुण गाये जाते ॥
पाकर इसको स्वर्ग लोक के, सब सुख जाते भूल ॥२॥
यह गौ माता का दूध ॥

नित उठ करके शाम सवेरे, हम इसके गुण गाते ।
और प्रेम के अमर सूत्र में, हम है बन्धते जाते ।
जैनी हो या आर्य सनातनी सब कुछ जाते भूल ॥३॥
यह गौ माता का दूध ॥

एक एक गुण गौ माता का है, अपने को प्यारा ।
एक एक गुण गौ माता का है, नयनों का तारा ।
मिट जाये यह और जियें हम, यह ना होगी भूल ॥४॥
यह गौ माता का दूध ॥

गौ हत्या के पाप से ही तो, भारत दुःख पाता है ।
गौ हत्या के घोर पाप से, त्राहि त्राहि होती है ।
सत्य अहिंसा शासन अब तो, मत करना तू भूल ॥५॥
यह गौ माता का दूध ॥

धन्य धन्य है ! धन्य धन्य है ! गौ माता का दूध ॥

जागे मेरा देश महान

यह भारत यह हिन्दुस्तान, जागे मेरा देश महान।
वेद ज्ञान का सूर्य उदय हो, पुनः धर्म का हो सम्मान।
गो पूजा गायत्री का जप, गंगा गीता का गुणगान।
पुनः जन्म ले इस धरती पर कर्मवीर ऋषिमुनि महान ॥१॥

ढूंढे से भी ना दर्शन हो, दीन दुःखी के यहां कभी,
अन्न वस्त्र गृह आत्मा ज्ञान से. भरे रहे भंडार सभी।
फले फूले फिर से जगती पर, भरत देश यह विश्व महान ॥२॥

भौतिक तम में भटक रहे, मानव कोहम पुनः बचावें,
और पकड़ कर आत्मा ज्ञान के, राजमार्ग पर हम लावें,
पुनः विश्व के प्राणीमात्र का, वेदों द्वारा हो कल्याण ॥३॥

विश्वगुरु सिंहासन पर, फिर बैठे भारत माता,
दिखे पुनः संसार चरण में, मां का शीश नवाता,
हिमगिरी के शिखरों पर फहरे, आर्य देश का अमर निशान॥४॥

भारत माता की जय गौ माता की जय।

ओ३म् शांति, शांति, शांतिः॥

आपका ही विनम्र संग्रहकर्त्ता
आयुर्वेद प्रेमी-छगनलाल कश्यप
(कश्यप भवन)
भारत आयुर्वेद गृह उद्योग सदन,
आनासागर कृष्ण गंज, अजमेर.

॥ श्रीः ॥

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, केन्द्र-नागपुर

सरसंघ चालक : मा. स. गोलवलकर

कार्तिक वद्य ६,

पत्र क्र. ७६ दिनांक १६-१०-६८ तिथि शकाब्द-१८९०

मान्यवर श्री छगनलालजी

सादर वन्दे ।

आपका दि० २०-९-६८ का पत्र दि० ९-१०-६८ को पहुंचा था। उसी दिन में उत्कल प्रान्त में प्रवास हेतु चला गया था। कल लौट आया। आपका दि० ११-१०-६८ का पत्र कल ही आया था।

श्रीमज्जगद् गुरु शंकराचार्य महाराज, गोवर्धनपीठ जगन्नाथपुरी, जैसे परमोच्च कोटि के महापुरुषों के विचार आपने प्रसिद्ध किये हैं। अब अन्य सामान्य लोगों से कुछ आपके पूछताछ करने की विशेष आवश्यकता नहीं है।

"परिवार नियोजन के नाम पर केवल अपने समाज की हानि ही नहीं तो अपने धर्म के श्रेष्ठ ग्रन्थों में वर्णित महापुरुषों तथा देवियों की प्रतिष्ठा भी नष्ट करने का प्रयत्न हो रहा है। परिवार नियोजन के प्रचार हेतु भगवान् श्री रामचन्द्रजी, माता कुन्ती आदि के नामों का उपयोग करना इसका प्रमाण है। सम्पूर्ण समाज को इसके विरोध में सचेत करना आवश्यक ही है।

ऐसा अनुमान है कि विदेशियों की यह चाल है। विदेशी प्रभाव में सुख मानने वाले अपने लोग भी उन्हें सहायता दे रहे हैं। हेतु कि हिन्दुस्तान से हिन्दु नष्ट हों। हिन्दु नष्ट होने पर यहां की प्रमाणिक राष्ट्र

शक्ति ही नष्ट होगी और विदेशियों को इस भूमि का स्वामित्व प्राप्त करना सुगम होगा यह दृष्टि उनकी हो सकती है। उनकी इन कुटिल नीतिपूर्ण चालों का शिकार बनना आत्मघात होगा। राष्ट्र ध्वस्त करना होगा। घोर अपराध एवम् पाप होगा। ऐसा अनुमान है।

आप के प्रयास में सब सप्रस्तृत देशवासी सहायक हों। एतदर्थ श्री मद्भगवद चरण में प्रार्थना करता हूं।

॥ इति शम् ॥

भवदीय

मा० स० गोलवलकर

वैदिक यन्त्रालय, केसरगंज, अजमेर से मुद्रित होकर
पंडित जगन्नाथ जी उपाध्याय अजमेर द्वारा प्रकाशित।